अंजोरिया

साल - 1 : अंक - 6

पूस अंजोरिया 2060 जनवरी 2004

एह अंक में :

सम्पादक के कलम से	डा. राजेन्द्र भारती	2
गजल	पद्मदेव प्रसाद 'पद्म'	2
लोकगीतन में जीवन के निस्सारता	डा.भगवान सिंह भाष्कर	3
करनी के फल	दयानन्द मिश्र 'नन्दन'	5
हम गीत अमन के गाइला	सुरेश कांटक	6
बालापन के छन्द	महेन्द्र सिंह प्रभाकर	7

सम्पादक के कलम

आत्म निरीक्षण के जरुरत

डा. राजेन्द्र भारती

भोजपुरी साहित्य अपना लमहर विकास यात्रा में अब अइसन मुकाम पर पंहुच गइल बा कि ओकरा के दोसरा भाषा के साहित्य का आगा ससम्मान राखल जा सकत बा।

कुछ लोगन के कहनाम बा कि एकरा पर बाहरी प्रभाव पड़ रहल बा, जइसे उर्दू के गजल, जपानी के हाइकू आदि। त एहमें का नुकसान भा खराबी बा? कवनो भाषा के कवनो विधा के भोजपुरी में स्थान देवल भोजपुरी के प्रतिष्ठा के बाति बा, ओकरा साहित्य के विकास आ समृद्धि के सूचक बा। परहेज नकल से करे के चाहीं, ज्ञान से ना। भोजपुरी साहित्य के कुछ नया दिआई त उ भोजपुरी के उन्नयन ह, विकास ह, समृद्धि ह। हमरा समुझ से कवनो विधा के अपनावल भोजपुरी साहित्य के आगे बढ़ावे में मदद करी, एहसे परहेज ना करे के चाहीं।

आजु भोजपुरी के रचनिहार लोगन के आत्मनिरीक्षण के जरुरत बा, मिली जुल के हर जगह अइसन मंच बनावला के जरुरत बा जेहसे जागरुकता बढ़ो, ज्यादा से ज्यादा लोग भोजपुरी साहित्य आ समाज से जुड़ो, तबहीं भोजपुरी के स्थिति सुखद होई।

राउरे -

राजेन्द्र भारती

कदम चौराहा, बलिया - 277001

कविता

गजल

पद्मदेव प्रसाद 'पद्म'

एक

कल तक रहल जे पावा, उ सेर हो गईल।
निपटे रहल गंवार जे, अहेर हो गईल ।।
भांजत रहल जे हरदम, छाती उठाइ के।
देखत मतर में बाज से, बटेर हो गईल।।
झोली जे हाथ ले के, घर घर घूमत रहे।
झेपते पलक के, बिड़ला कुबेर हो गईल।।
ताकत से जे कि अपना, ढकले रहे गगन।
मउवत का पांव खींचते, ळ ढेर हो गईल।।
आसन पर ळँच बईठल, जे कि रहे धधात।
लुढ़कते जमीं पर, गउरा गंड़ेर हो गईल।।
के बा समर्थ अईसन, जे ना उठल गिरल।
राजा रहे जे कल तक, ळ चेर हो गईल।।

दो

सबुर बाटे हमके गिरानी से अपना।
सबुर बाटे टूटल पलानी से अपना।।
अब सबुर के सिवा बाटे रह का गईल।
सबुर बाटे घीसल जवानी से अपना।।
कुछ बतवनी, छिपवनी भी उनुका से हम।
सबुर बाटे बीतल कहानी से अपना।।
दर्द आपन सुनाके हम कर का सकीं।
कहल कुछ ना चाहीला बानी से अपना।।
सबे बाटे जानत बतावे के का बा ।
लुटाईं ना राहे पर पानी के अपना।।
लिखके कविता कहानी गजल जात बानी।
सबुर बाटे एही निशानी से अपना।।

बुढ़नपुरवा, बक्सर, बिहार

लेख

लोकगीतन में जीवन के निस्सारता

डा.भगवान सिंह भाष्कर

आजु ई संसार नश्वर ह..। दुनिया के सब नाता रिश्ता झूठ ह..। आदमी एह संसार में नाटक के पात्र के तरह आपन भूमिका निभावेला आ जइसहीं ओकर रोल खतम होला ऊ संसार रुपी मंच के छोड़ के चल देला। मरद मेहरारु, बाप बेटा, हित नात, दोस्त दुश्मन सब छनिक नाता होला। मुअला का बाद केहू केहू ना होखे।

भारत के हर भाषा के साहित्य में जीवन के निस्सारता से जुड़ल लिखनी के कवनो कमी नइखे। परिनिष्ठित साहित्य होखे भा लोक साहित्य, जीवन के नश्वरता के अनुगूंज हर जगह बराबरे सुनाई पड़ेला।

मैथिल कोकिल विद्यापति जब सब ओरि से हार गइलन त भगवान कृष्ण के शरण में अपना के डाल दीहलें –

''तातल सैकत वारि विन्दु सम,
सुत मित रमनी समाजे,
तोहे बिसरि मन ताहे समरपिलु,
अब मझु होवे कौन काजे,
माधव हम परिनाम निराशा।''

लोक साहित्य में भी अइसन गीतन के भण्डार भरल बा जवन जीवन के निस्सारता का ओरि इशारा करत बाड़े आ भगवत् भजन करे के संदेश देत बाड़े।

सब आदमी के इश्वर के दरबार में जरहीं के पड़ी, आ पछिताये के पड़ी। एह स्थिति के बरनन लोक गीत में देखीं –

''एक दिन जाये के पड़ी परभू के नगरिया,
डगरिया बीच पछिताये के पड़ी।
उहवां कईल तू करारी,
भगति करम हम तोहारी।
ईहवां भूलल बाड़ माया के बजरिया,
डगरिया बीच पछिताये के पड़ी।''

सब देहधारी के एक ना एक दिन भगवान का दरबार में जाहीं के पड़ी आ ओह दिन पछिताये के भी पड़ी। काहे कि ओहिजा से त तू कहि के चलल रहूव कि दुनिया में भगवान के भगति करेम, बाकिर एहिजा पंहुचला का बाद तू माया का बाजार में आपन वादा भुला गइलें। एहसे भगवान के ईहां जाये के राह में तहरा अपना करनी पर पछिताहीं के पड़ी।

कहल गइल बा कि आदमी के अपना गलती के अहसास हो जाव त ळ सुधर जाला। जीवन का कवनो चरण में ळ सुधर जाव आ भगवान का भगति में डूब जाव त ओकर जिनिगी आ भविष्य संवर जाई। एहि बाति के बरनन लोकगीत में देखीं –

''अबहिं बिगड़ल नईखे मनवा,
करऽ राम के भजवना,
ना त बान्हल जईब जम के दुअरिआ,
डगरिया बीच पछिताये के पड़ी।''

हे मन, अबहिओं कुछ बिगड़ल नईखे। अबहिओं से राम के भजन कर ल..। ना त जमराज का दरबार में तहरा के सजा मिली आ भगवान के ईहां जाये के राह में तहरा अपना करनी पर पछिताहीं के पड़ी।

विधि के विधान बड़ा विचित्र बा। जनम केहू देला, भाग केहू अउर लिखेला, आ मउत केहू तीसरा का हाथे बा। एकर झांकी लोकगीत में देखीं –

''केइये जनमिया हो दिहलें,
केइये मारेला टांकी?
कवन भइया आवेलें बोलावन हो रामा?
राम जी जनमिआ हो दिहलें,
बरम्हा मारेलें टांकी,
जम भईया आवेले बोलावन हो रामा।''

आदमी के जनम देबे वाला के ह? के ओकर भाग्य लिखेला? आ ओकर जीवनलीला के खतम करेला? एह सवालन

के जवाबो ओही गीत में आगे बा कि रामजी जनम देलें, ब्रह्माजी भाग्य लिखेलें, आ मउत का बेरा जमराज के हाथ में बा।

जब कवनो आदमी के मउत होला त ओकर शरीर अपना गति का चिन्ता में रोवे लागेला। ए ह भाव के बरनन लोकगीत में देखीं -

''निकलत परान काया हो काहे रोई?
रोई रोई काया पूछे माया से -
सुनहू माया चित लाई,
तू त.. जइब अमरलोक में,
हमरो कवन गति होई?
निकलत परान काया हो काहे रोई?''

प्राण निकलत घरी देह काहे रोवे? देह रो रो के आत्मा रुपी माया से पूछेला - तू त अमर लोकि में चलि जईब बाकिर हमार का परिनाम भा गति होई?

मुवला का बाद आत्मा के आपन राह अकेलहीं चले के पड़ेला। ओकर साथ देबे वाला तब केहू ना रहे। महतारी मेहरारू भई सब केहू एहिजे रोवत रहि जाला। एकर बरनन लोकगीत में देखीं -

''केश पकड़ के माता रोवे,
बांह पकड़ के भाई,
लपटि झपटि के तिरिआ रोवे,
हंस अकेला जाई।''

आदमी के मुवला का बाद ओकर माथ अपना गोदि में रख के महतारी रोवत बाड़ी। भाई ओकर बांह हिला हिला के रोवत बा। आ मेहरारू ओकरा से लपट झपट के रोवत बाड़ी। बाकिर केहू ओकरा संगे जाये वाला नइखे। सबकेहू एहिजे रहि जाई आ ऊ अपना आखिरी सफर में अकेलहीं जाई।

आदमी कतना गलतफहमी में रहेला ! भर जिनिगी ऊ अपना देहि के साबुन सोडा से मल मल के धोवेला। ओकरा अपना देहि के कतना फिकिर रहेला कि देहि चमकत रहो। काश, ऊ जानि पाईत कि मुवला का बाद ई सब बेमानी हो जाई। एहि बाति के अब लोकगीत में देखीं - ''एकदिन तरुवर के सब पत्ता,
झरि जईहें जी एक दिनवा।
ऐ देहिआ के मलि मलि धोवल..
साबुन सोडा लगाई।
सोना जइसन चमकत देहिआ
कवनो काम ना आई।''

आदमी खाली दुनियादारी का फेर में रहेला बाकिर जब ओकरा होश आवेला त ऊ भगवान के गोहरावे लागेला। ऊ बुझ जाला कि ओकर नाव के पार लगावे वाला भगवान के छोड़ि के दोसर केहू नइखे। एह मानसिक व्यथा के लोकगीत में बरनन देखीं -

''नइया बीच भंवर में
हमरो डगमगाइल बा,
जिअरा मोरि डेराईल बा।
दउड़ीं दउड़ीं किसन कन्हइया,
हमरो पार लगा दीं नईया।
रउरा चरन कमल में
दास लोगि लपटाईल बा,
जिअरा मोरि डेराईल बा।''

एह गीत में अपना हालत से घबड़ाइल आदमी भगवान के गोहारत बा कि हे किसन भगवान दउड़ के आईं आ हमरा नाव के पार लगादीं। दुनिया भंवर में डूबे से डेराइल राउर दास लोग रउरा गोड़ि से लिपटाईल बा कि रउरा ओह सब लोग के पार लगा दीं।

सांचो ई जीवन नश्वर बा। लोकगीतन में जीवन के निस्सारता के चर्चा एह लेख में संक्षेप में कइल बा। भगवान के भजन बिना ई मानव जनम सार्थक ना हो सके। दंनिया के मायाजाल में ना फंसि के हमनि के भगवान का चरण में अपना के समर्पित कर देबे के चाहीं। भगवान के किरपा हो जाई त सब कुछ पार लाग जाई।

महामंत्री,
अ.भा.भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना।
सम्पर्क - प्रखण्ड कार्यालय का
सामने, सीवान।

कहानी

करनी के फल

दयानन्द मिश्र 'नन्दन'

मुंशी सीतालाल अपना जमाना के नामी-गिरामी पहलवान रहले। इनका पास आपन खेत ना के बराबर रहे। इनकर बाबूजी दोसरा के खेत लगान पर ले के बोअसु आ एगो भंईस जरूरे राखसु। सीतालाल अहिरन के -झुण्ड में रहसु आ पहलवानी करसु। भंइसि के दूध मिलबे करे। धीरे धीरे इनकर देहि फूटल आ दस बीस गांव में पहलवानी में गनाए लगले। आपना अखाड़ा पर दस आदमी के लड़ावला के बादो जब दम ना आइल रहे त चारि पांच मील दउरसु। धीरे धीरे इनकर नांव प्रदेश भर में फइल गइल। पूर्वी जिलन में इनकर एगो स्थान बनि गइल। ई कुल्ही सुन के इनका बाबूजी के छाती फुला जाव आ अू बड़ा खुश होखसु।

कमालपुर गांव कायस्थन के रहे। अपना बल का प्रभाव से अहिर लोग के मिला के मुंशी सीतालाल कमजोर आदमियन के नाजायज तरीका से दबा के ओहनी के जमीनन पर कब्जा क लिहले। पहलवानी का चलते पूरा अहीर समाज इनका साथे जीये मुए लगले। ओही गांव के एगो कमजोर अहीर के लड़की बीस बाइस साल के भइल रहे। ओकरा के बरिआरी ध के अपना घरे ले अईलन आ ओकरा से शादी क लीहले। ओही लड़की से सीतालाल के तीन गो सन्तान भइले - रामाशंकर, दयाशंकर, आ गौरीशंकर। तीनो जने पहलवान रहले बाकि खाली रामाशंकर पहलवानी करसु। दयाशंकर खेती करावसु आ गौरीशंकर रेलवे पुलिस के नौकरी।

खेती सम्हारे गांव में रहे वाला दयाशंकर के संघतिया चोरे बदमाश रहले। ओहनिये का बल पर उनुकर धंउसपट्टी गांव में चलत रहे आ एही बल पर ळ गांव के परधानो हो गईलन। काम बड़ा चकाचक रहे। तीनो जाना के शादी बिआह भी समाज का अनुसार हो गइल। उपर से देखी त सबकुछ नीमन लउके। बाकि असल हालात कुछ अउरे रहे। बाप सीतालाल के आंख बुढ़ापा में आन्हर हो गइल रहे। चश्मो पर ना लउके। देहि बेसम्हार भारी हो गइल रहे। ठेहुनिया बइठल ना जाव आ अू खड़े खाड़ी टट्टी पेशाब करसु।

रमाशंकर के नौकरी इलाहाबाद में चुंगी आफिस में रहे। दिन में काम आ सबेरे सांझ अखाड़ा में पहलवानी। कुछ दिन बाद उनुका लइका त भईल लेकिन मेहरारू मर गइली। उ लइका अपना उमिर में नीकहन पहलवान निकलल। लेकिन दयानत बिगड़ गइल आ उ गलत संगत में पड़ि गइलन। एगो लइकी से ईयारी हो गइल रहे। ओही इयारी का निभावे में टीबी हो गइल। दवा दारू ढेरे भइल लेकिन उ बचलन ना। रमाशंकर का जिनिगिये में परिवार साफ हो गइल। अकेले बुढ़ारी काटे गांवे आ गइलन।

दयाशंकर लाल के एगो लइका आ ए गो लइकी भईल। लइकी बड़ भइल त ओकर बिआह कवनो कायस्थ परिवार में ना हो पावल आ बाद में ळ कवनो यार का संगे फरार हो गइल। लइका के तबियत हमेशा खराबे चले। लइकाईं से लेके अन्तिम घड़ी ले ओकर दवाई बन्द ना भइल।

गौरीशंकर के कवनो बालबच्चा ना भइले स। नौकरी से रिटायर हो गइलन त रेलवे थाना पर बड़ा धूमधाम से उनकर बिदाई समारोह मनावल गइल। सब सामान पैक क के पहिलहीं ट्रक से गांवे पठा दीहल रहे। बिहान भइला दूचार गो सिपाही इनका के गांवे पंहुचावे संगे चलल लोग। संयोग अतना खराब रहे कि राहे में हवा लाग गइल आ कपार से लेके गोड़ तक दाहिना आधा अंग फालिज के शिकार हो गइल। आवाजो खतम हो गइल। जइसे तइसे क के सिपाही सब गांव ले पंहुचवले।

सीतालाल का जिनिगीये में उनकर सगरे परिवार के हालत खराब हो गइल। दयाशंकर लाल के सोझा आन्हर बाप, बूढ़

महतारी, बूढ़ बड़ भाई, लकवा मारल छोटका भाई, आ बेमार भतीजा पांच पांच गो आदमी के इलाज आ खिआवल पिआवल के खरचा। सब परधानी निकले लागल। आमदनी अठन्नी आ खरचा साढ़े सात गो वाला हालत रहुवे। अइसना में उहे भइल जवन होला। धीरे धीरे खेत बेचाये लागल। दूइये चार बरिस में सगरी खेत बिका गइली स। आमदनी के कवनो जरिया रहे ना। बाद में इलाज बिना एक एक क के बेमारो लोग मुए लागल। टूटल आत्मा लेके दयोशंकर चल दीहलन भगवान घरे।

रह गइलन त सीतालाल। उमिर सौ बरिसा। आंखि के आन्हर। देहि के पटकाइल। दलान प फेंकाइल रहसु। ना केहू देखे वाला ना सुने वाला। जवना दुआरी कबो बइठे के जगहा घट जात रहे ओह दुआरी कुकुरो फेंकरे वाला ना रहे। कबो कबो पुरनका नाता का चतते मेहरारू के भतीजन में से कवनो आके फूफा के सेवा टहल क जा स। ससुरारिये से खाना ओना आ जाव।

दुआरी से गुजरत केहू के आवाज सुनस त सीतालाल बोला लेस आ आपन कहानी सुनावे लागसु। जवना घर के लइकी भगा के बिआह कइलन ओही घर का टुकड़ा प जिनिगी चलत रहे। 'जुलुम किये तीनो गये, धन धरम औ बंस। ना मानो तो देख लो रावण कौरव कंस।' उहे हाल रहे सीतालाल के। अब ळ इहे कहसु कि नाजायज काम ना करे के। नाजायज थोरही दिन चमकेला बाद में ओकरा बिलाये में, नाश होखे में देरी ना लागे। कहसु कि गंदा राह प चलला प देहि में गंदा लागबे करी। हमरा जिनिगी से सभे सीखे आ माने कि कलियुग में अपना बरनी के फल एही जिनिगी में भोगे के पड़ेला।

दिघार, बलिया ।

कविता

हम गीत अमन के गाइला

सुरेश कांटक

जब जब आकाश उदासेला,
हर राह अन्हरिया में होला,
हम आपन दिया जराईंला,
हम गीत अमन के गाइला।

जब बाज झपट्टा मारेला,
बिखधर के फन फुफकारेला,
चिरईंन से सांस मिलाईला,
हम गीत अमन के गाइला।

होरी में धनिया रोवेले,
रो रो के दुखवा धोवेले,
हम गोबर के गोहराईला,
हम गीत अमन के गाइला।

धरती जब फूंका फारेले,
कुंहंकत कोईल जब हारेले,
हम आपन कलम उठाईंला,
हम गीत अमन के गाइला।

सागर में आगि लहक जाला,
गागर में बाति बहकि जाला,
हम बहकल के बहलाईंला,
हम गीत अमन के गाइला।

जब बाघ बकरियन के खाला,
जब दूध बिलरिया पी जाले,
बछरन के नीन भगाईंला,
हम गीत अमन के गाइला।

कांट, ब्रह्मपुर, बक्सर - 802 112

लेख

बालापन के छन्द

महेन्द्र सिंह प्रभाकर

छन्द गीत के उप-कारक हऽ आ छन्दे गावल जाला। ई जीवन के हर पहलू से जुटल रहेला। अब ई वैज्ञानिक सत्य मानल जा रहल बा कि गीत संगीत का प्रभाव से रोग के निदान हो सकेला। दुधारु से अधिका दूध पावल जा सकेला। फलदार से अधिका फल पावल जा सकेला। एह से स्पष्ट बा कि गीत संगीत में ढेरे शक्ति बा।

प्रसव वेदना में हजार बिच्छियन के डंक के पीड़ा मानल गइल बा। ओह बेदना के अंगेजे में सोहर के हाथ बा। सोहर के छन्द के धुन, स्वर, लहर आ तालके प्रभाव बेजोड़ होला। सोहर जच्चा बच्चा दूनू प सोहावन प्रभाव डालेला। दूधमुंहा बच्चा जब बेलगना रोवे लागेला तब ओकरा के सुतावे भा ओकर मन बहलावे खातिर लय में थपकी दे दे के लोरी गवाला जेहसे ऊ सुत जाला। भोजपुरी के परंपरित लोरी में सभ्यता संस्कृति के, ज्ञान विज्ञान के अपार भंडार बा। बानगी देखीं :

अरर गरर पुआ पाकेला,
चिलरा खोईंछा नाचेला।
जइहे चिलरा खेत खरिहान,
ले अईहे सिरहंटिया धान।
ओहि धान के चूरा कुटाय,
ऊ चूरा मोरा बभना खाय।
बभना के पूतवा देला आशीष,
जीये बबुआ लाख बरिस।

एह गीत प धेयान देला से मालूम होति बा कि एकर छन्द सोरह मात्रा के तुकान्त बा। मात्रिक छन्द के संबंध प्राकृत काल से बा। तुकान्त भइल अपभ्रंश से पहिले ना रहे। एकरा शब्दावली प धेयान देला से मालूम होति बा कि आदिवासी शब्द 'चिलरा' के प्रयोग एकरा में आदिवासी प्रभाव के झलका देति बा। आदिवासी भाषा में चिलरा भा चिल्लर छोट लइकन भा रेजगारी के कहाला। सिरहंट धान के नामो ओहकाल के देखावत बा जब सिरहंट, बरांटी, साठी, सेरहा वगैरह धान के प्रजातियन के प्रधानता रहे। आजु काल्ह ई सब प्रजाति लुप्त होखे के कगार प बाड़ी स। दोसर बाति जवन एह गीत से झलकत बा उ ई कि पहिले ब्राह्मण के नेवान - नव अन्न - कराके तब दोसर लोग खात रहे। दुआ आशीरवाद से उमिर बढ़े के बाति अब विज्ञान सम्मत मानल जात बा। एहतरे देखीं त परंपरित लोकगीतन में हमनी के संस्कृति आ समाज के इतिहास भरल बा। साथे साथ भोजपुरी मात्रिक आ तुकान्त छन्द के ई एगो पुरान नमूना बा जवन कंठे कंठे पुश्त दर पुश्त से चलल आ रहल बा। छोट लइकन के खिआवे पिआवे में छन्दन के उपयोग गीत रूप में कइल जाला। एह गीतन में वात्सल्य रस के धारा प्रवाहित होत रहेला। जइसे :

ऐ चन्दा मामा,
आरे आवऽ
पारे आवऽ
नदिया किनारे आवऽ।
सोना के कटोरवा में,
दूध भाति ले ले आवऽ
बबुआ के मुंहवा में घुटुक।

बच्चा के खड़ा होखे खातिर 'धा ती ना, धा ती ना' कह के उत्साहित कइल जाला जवना में छह मात्रा के दादरा ताल ध्वनित होला। एह में 'धा ती ना' तबला के तीव्र जाति के बोल ह जवना के दोहरा दीहला से छव मात्रा के दादरा ताल बन जाता। एह से स्पष्ट बा कि दादरा ताल के जड़ पाताल तक में धंसल बा।

दुआर प भा खोरी में लइकन के खेले खातिर कवनो दोसर उपकरण के जरुरत ना होखे। ओह में सभ खेल छन्दात्मक आउर गेय बाड़न स। जइसे 'ओका बोका' के खेल तीन चरण में समाप्त होला। पहिलका चरण में :

ओका बोका तीन तलोका,
लउआ लाठी चन्दन काठी,
बाग में बगडोला डोले,
सावन में करइला फरे।
उ करइला के नांव का ?
इजई बिजई पनवा फुलवा,
ढोढ़िया पुचुक जा।

दोसरका चरण में :
थापुर थापुर तेलिया,
घीव में चमोरिया,
हम खाईं कि भउजी खाए?
भउजी पतरेंगिया,
धई कान ममोरिया।

तिसरका चरण में :
चूँटा हो चूँटा,
मामा के घइलवा
काहे फोरलऽ हो चूँईटा ?

आ आखिर में लाता लूती कर के खेल खतम कइल जाला। ई सभ छन्द ताल कहरवा के गीत बाड़न स। एह में पहिलका चरण के पहिलकी आ दोसरकर पांति सोरह सोरह मात्रा के बा जवना में आठ आठ मात्रा प यति आ तुक मिलत बा। हरेक में दू दू गो सम चतुष्पदी रहला अवरु तुक मिलला से 'मदन' छन्द बा जवना के संबंध प्राकृत अवरु अपभ्रंश से बा। हिन्दी में ई मदन छन्द नइखे लउकत।

दोसरका खेल 'तार काटो' के बा। ईहो तीन चरण में समाप्त होला। जइसे पहिलका चरण में :

तार काटो, तरकुल काटो,
काटो रे मोर खाजा।
हाथी प के घुघुआ चमकि चले राजा।
राजा के रजइया काटो,
भईया के दोपाटा।
हिंच मारो हिंच मारो
मूसर लेखा बेटा।

दोसरका चरण में :
तलवा खुलबे ना करे,
चभिया मिलबे ना करे।
चभिया मिल गइल,
तलवा खुल गइल।

आ तिसरका चरण में :
एह में का बाऽ बबुआ?
का खालाऽ दूध भाता?

आदि।

एकर पहिलका चरण के छन्द ताल छन्द के बा। दोसरका में पहिला तेरह छन्द के मात्रा बा जवना के मात्रिक संबंध प्राकृत के अप्सरोविलसित छन्द से बा। बाकि ए करा में तुक भइला से अपभ्रंश से संबंधित हो जात बा। एकर अन्तिम भाग में नवमात्रा के छन्द बा। एह प्रकार से मात्रिक छन्दन के प्रारम्भिक प्रभाव लइकन के खेल से बा जवन कंठे कंठे पुश्त दर पुश्त से चलल आ रहल बा।

बाहरी खेलन में चिका, कबड्डी आदि बा जवना में कवनो उपस्कर के जरुरत ना पड़े।कबड्डी में दूगो दल रहेला जवना के सदस्य दोसरका दल के पाला में जाके आपन शक्ति बल के प्रदर्शन करेला। एहमें तरह तरह के छन्छ पढ़ल जालन स। जइसे :

आवतानी हो, परइह मत हो।
कान जाई टूटी, कपार जाई फूटी,
लड़िकपन छूटी।

भा,
चल कबड्डी रेता,
भगत मोर बेटा,
भगताइन मोर जोड़ी,
चरावेली घोड़ी।

चाहे,
चल कबड्डी आरा,
सुल्तानगंज मारा,
कोई नाम ले हमारा।

भा,
कबडी में लबडी, पताल में पुआ,
मालिन के बेटिआ खेलत बाड़ी जुआ।

एही तरह से अनेक छन्द बाड़न स जवन ताल छन्द के बाड़न स।

खेले में 'दाव पुरवल' जरुरी होला। कंहू अपने खेल के दोसरका के दाव ना पुराई त दोसरका किरिआ धरा दिही। पहिलका अपना प चढ़ल किरिआ छोड़ावे खातिर कहे लागी :

बकुला बकुला कहाँ जालऽ
मुरई का खेत में।
सेर भर सतुआ ले ले जा,
गंगा में दहववले जा।
गंगा में के खूंटा खूंटी, लोहे के मचान,
हमरो किरिअवा उतरीहऽ हो भगवान।

ई कह देला प किरिआ उतरि जाला। जब लइका कुछ मजगुत रहेला त ओकर दाव ना पुरवईला प कहेला :

हमार दउवा ना पुरावे, सेकर माई भुजरी,
खाले गिरिगिटिआ बिआले मुसरी।

अतना कहला प दाव पुरावल जरुरी हो जाला काहे कि एह में गाली के पुट बा। लइकन के इहो विश्वास रहेला कि दाव ना पुरवला प 'लिट' चढ़ जाला जवन बराबर चढ़ल रहेला। ऊ लिट का हऽ से केहू का मालूम नइ खे। फेर किरिआ भा लिट उतारे के सरल उपाय इहे छन्द में रहे कि :

एक मुठी सुतरी, हजार किरिआ उतरी।

बालापन के विश्वास में ई बइठल बा कि एकरा से सभ किरिआ उतरि जाला।

गोल गोल घुमला से घुमरी चढ़ जाला। घ ुमरी खेलत खानी लइका बोलेलन :

चकवा चकइया, हम दूनू भईया,
भईया के बिआह में, दूई सव रुपईया।

कवनो सयान भा बूढ़ जब सुताने सुत के अपना ठेहुना प बच्चा के सुताके खेलावेलन त गावेलन :

घुघुआ मन्ना उपजे धन्ना,
नया भीति उठेला, पुरान भीति ढहेला,
सम्हरिहे बुढ़िया रे।

खेले भा घुमे फिरे के क्रम में बहुत तरह के छन्दन के प्रयोग होला। जइसे सांढ़ के देखि के लइका हल्ला मचावेलन कि :

संढ़वा के पीठ प बदुरि बिआले।

पण्डित जी के रिगावत घरी कहेलन स :

पंडी जी पंडी जी गोड़ लागीलेऽ
रउवा छोटकी पतोहिआ के
ले भागी लेऽ

चाहे आकाश में बगुला देखिके :
बकुला बकुला दाम दऽ
चिनिआ बादाम दऽ।

जाड़ा में घाम तापत घरी :
रामजी रामजी घाम करऽ
सुगवा सलाम करे,
तहरा लड़िकवन के जड़वत बा।

बच्चवन के सभ कहानी छन्दात्मक भा चम्पू बाड़ी स। अधिकतर त कल्पित कथा हई स। एहमें पशु पक्षिअन के आदमी लेखा सोचत आ बोलत बतिआवत देखावल रहेला। गीतात्मक भईला से पुनरावृति में साहचर्य से काम लिहल जाला। छन्दात्मक कथा सुनावे के प्रचलन चिरकाल से बा। मनोविज्ञान के मुताबिक याद करे खातिर लयात्मक पाठ जरुरी ह। मस्तिष्क के विकास खातिर कथा-कथन के महत्व भी मनोविज्ञान मानेला। हमनी किहां आचार्य विष्णु शर्मा के कथा संग्रह 'पंचतन्त्र' के आजुवो महत्व बा। जवन परम्परा हमनी किहां संस्कृतकाल से चलल आवत बा ओकरा ओरि पाश्चात्य वैज्ञानिक लोग के आंखि अब खुलल हऽ।

लइकाईं में सुनल पहिलका गीत कथा 'बढ़ई बढ़ई खूंटा चीर' आजुले याद बा :

बढ़ई बढ़ई खूंटा चीर
खूंटा में मोर दाल बा।
का खाईं का पीहीं,
का ले के परदेस जाईं ?

बाकिर बढ़ई त अपना काम मे मशगूल बा। एगो चिरई खातिर ओकरा लगे टाईम कहां बा? त चिरई राजा के लगे जात बिआ :

राजा राजा बढ़ई दण्डऽ
बढ़ई ना खूंटा चीरे।
खूंटा में मोर दाल बा।
का खाईं का पीहीं,
का ले के परदेस जाईं ?

लेकिन राजा के लगे भी फुरसत कहां बा? तब चिरई रानी का लगे जा के आपन दुख सुनावत बिआ :

रानी रानी राज बुझावऽ
राजा ना बढ़ई दण्डे,
बढ़ई ना खूंटा चीरे।
खूंटा में मोर दाल बा।
का खाईं का पीहीं,
का ले के परदेस जाईं ?

एही क्रम में अू सांप, लाठी, आग, समुन्दर, हाथी, रस्सी, मूस, बिलाई ओगैरह का लगे जा के आपन दुखड़ा सुनावत बिआ :

बिलाई बिलाई मूस मारऽ
मूस ना रस्सी काटे,
रस्सी ना हाथी बान्हे,
हाथी ना समुन्दर सोखे,
समुन्दर ना आग बुझावे,
आग ना लाठी जारे,
लाठी ना सांप मारे,
सांप ना रानी डंसे,
रानी ना राज बुझावे,
राजा ना बढ़ई दण्डे,
बढ़ई ना खूंटा चीरे।
खूंटा में मोर दाल बा।
का खाईं का पीहीं,
का ले के परदेस जाईं?

आ जब एगो तैयार हो जात बा त दोसरका तुरन्ते डर से तैयार हो जात बा :

हमरा के चीरऽ उरऽ जनि कोई,
हम अपने से फाटबि लोई।

खूंटा फाट जात बा आ चिरई आपन दाना ले के उड़ि जात बा अपना राह।

एह कथा में बिलाई तक चहुंपे में ताल कहरवा आ अवरोही में खूंटा फटला तक ताल दीपचन्दी में बा। एहतरे हमनी का पावत बानी जा कि बालापन के हर पहलू में छन्द के छांह भरल बा।

करनौल, भोजपुर, बिहार